DGG-001-031201 Seat No. _____

M. Phil. (Comp. Lit.) (Sem. II) (CBCS) Examination

May / June – 2015

Hindi : EHN-1001

(अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार)

Faculty Code : 001
Subject Code : 031201

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : विकल्प समझकर अंक के अनुसार उत्तर दीजिए ।

1 किसी एक प्रश्न का विस्तृत उत्तर दीजिए : **14**

(1) अनुवाद की परिभाषा देते हुए, उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए ।

(2) अनुवाद के स्वरूप को सविस्तार समझाईये ।

(3) अनुवाद कला है, विज्ञान है या शिल्प ? युक्ति संगत उत्तर दीजिए ।

2 (A) एक प्रश्न का सम्यक् उत्तर दीजिए : **10**

(1) अनुवाद प्रवृत्ति के इतिहास की रूपरेखा सविस्तार बताईये ।

(2) गद्य कृतियों के अनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए ।

(B) एक प्रश्न का सम्यक् उत्तर दीजिए : **10**

(1) अनुवाद के भविष्य को निर्धारित कीजिए ।

(2) पद्य कृतियों के अनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए ।

3 (A) दो पर टिप्पणी तैयार कीजिए : **10**

(1) अनुवादक के गुण ।

(2) अनुवाद की उपयोगिता ।

(3) अनुवाद की सीमाएँ ।

(4) मुहावरें के अनुवाद की समस्या ।

(B) दो पर टिप्पणी तैयार कीजिए : **10**

(1) सांस्कृतिक शब्दों के अनुवाद की समस्याएँ ।

(2) लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ ।

(3) नाट्यानुवाद ।

(4) अनुवाद संस्कृति के दूत के रूप में ।

4 एक–दो वाक्य में उत्तर दीजिए : 6

(1) भोलानाथ तिवारी द्वारा दी गई अनुवाद की परिभाषा बताईए ।

(2) 'स्त्रोतभाषा' का तात्पर्य बताईए ।

(3) 'लक्ष्यभाषा' का तात्पर्य बताईए ।

(4) 'सारानुवाद' किसे कहते है ?

(5) किस अनुवाद में मूल सामग्री की व्याख्या की जाती है ?

(6) 'समय और अवसर किसी की प्रतिक्षा नहीं करते' – वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद करे ।

5 (A) हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 5

આંતઃ ચેતનામાં બાધક સાધકની બાહ્ય ચેતના છે. તેમાં બાહ્ય ચેતના ક્રિયાશીલ અને જાગ્રત રહે છે. જ્યારે આંતઃ ચેતના ગુપ્ત તથા સુષુપ્તાવસ્થામાં વિદ્યમાન રહે છે. સાધકના મંત્ર જાપ પૂર્ણ તથા આંત ચેતનામય બનવાથી મંત્રની સિદ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે. મંત્ર ઉપાસનામાં સાધકનું ધ્યેય તેમની આંતઃ ચેતનાને મહત્તમ ક્રિયાશીલ કરવાનું હોય છે. હવે પ્રશ્ન એ થાય કે, અંતઃ ચેતના જાગૃત કેવી રીતે કરવી ? તેના માટે યમ, નિયમ અને અષ્ટાંગ યોગનું પાલન કરવામાં આવે.

(B) गुजराती अथवा अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 5

प्रसाद का अर्थ होता है, शुद्ध, स्वच्छ । जिस तरह ईश्वर के चरणों में रखा हुआ प्रसाद शुद्ध एवं पवित्र माना जाता है, उसी तरह काव्य में प्रसाद गुण बहुत ही महत्त्वपूर्ण समझा जाता है, यह गुण अत्यन्त ही स्पष्ट माना जाता है । अर्थात् जिस रचना को पढ़ने से उसका अर्थ तुरन्त ही अनायास समझ में आ जाता है और संपूर्णतः हृदय में समा जाता है, वह रचना प्रसाद गुण युक्त होती है । प्रसाद गुण में स्पष्टता होती है । कहने का तात्पर्य यह है कि जो कृति अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट होती है, शुद्ध एवं स्वच्छ होती है वह कृति प्रसाद गुण से परिपूर्ण मानी जाती है ।